

Padma Shri



DR. SIDDALINGAIAH (POSTHUMOUS)

Dr. Siddalingaiah was the most influential Kannada poet in the modern era. He was a multifaceted personality - writer, social activist, academician and a legislator. He began his trailblazing career with poetry of rage and rebellion and shot into fame in the Kannada literary world with publication of his collected poems 'Holemadigara Haadu' - a trend setter for the next generation in 1970's.

2. Born on 3rd February, 1954, Dr. Siddalingaiah obtained his MA degree in Kannada with D.L. Narasimhachar gold medal in 1976 from Bangalore University. He was awarded Ph.D in Kannada for his unique doctoral dissertation titled 'Gramadevathegalu' - Village Goddesses by the Bangalore University. With over 30 years of teaching experience at postgraduate level, Dr. Siddalingaiah served in various capacities at the Bangalore University.

3. Dr. Siddalingaiah was well known as a social activist right since his student days. He directly connected with the masses through his poetry and speeches. He was the founder member of Karnataka Dalitha Sangharsha Samiti and Bandaya Sahitya Sanghatane and fought against caste and class struggle. His active involvement in Dalit and progressive movements made him a People's Poet. His songs instilled new confidence among young Dalits. His revolutionary poems shaped the tone of Dalit & Bandaya poetry.

4. Dr. Siddalingaiah was known for his creative thinking, coupled with wit and wisdom. He has penned several works in different genres of Kannada literature- poetry, plays, short stories, criticism & autobiography. With its tragicomic mode, his autobiography 'Ooru-Keri' created a new tone for the genre. His works have been translated into various Indian and foreign languages. His writings have potential to inspire and influence generations to come. As a nominated member of the Karnataka Legislative Council for 12 years, he demonstrated how an activist- intellectual could make a difference to the downtrodden, suffering masses. In the council, he has discussed numerous progressive topics concerning socioeconomic issues. He was known for his exceptional work as Chairman of Kannada Development Authority and Kannada Book Authority, Government of Karnataka. He made invaluable contribution while holding various positions in many more distinguished institutions.

5. Dr. Siddalingaiah was the recipient of numerous awards and honours, some of them are Karnataka Rajyotsava Award in 1986, Government of Karnataka award for the best film song lyrics in 1983 & 1999, Dr. B.R. Ambedkar Centenary Celebration Special Award in 1992, Folklorist award in 2001, Dr. Ambedkar Award, New Delhi in 2002, Babu Jagajivan Ram Award in 2005, Naadoja Award in 2007, Alvas Nudisiri Award in 2012, Namdev Dasal Shabdha Puraskar, Mumbai in 2015, Honorary Doctorate from Alliance University, Bangalore in 2017, Honorary D.Lit by Central University, Gulbarga in 2018, Nrupatunga Award in 2018, Pampa Prashasti by Government of Karnataka in 2020 and Kalinger Karunanidhi Porkizhi Award by Book Sellers and Publisher's Association, South India, 2020 (BAPASI).

6. Dr. Siddalingaiah passed away on 11th June, 2021.

पद्म श्री



डॉ. सिद्धलिंगय्या (मरणोपरांत)

डॉ. सिद्धलिंगय्या आधुनिक युग के सबसे प्रभावशाली कन्नड़ कवि हैं। वे लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद और विधायक के रूप में एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं। उन्होंने आक्रोश और विद्रोह की कविता के साथ अपने शानदार करियर की शुरुआत की और अपने कविता संग्रह 'होलमदिगरा हादु' के प्रकाशन के साथ कन्नड़ साहित्य जगत में प्रसिद्धि प्राप्त की जो कि 1970 के दशक में आने वाली पीढ़ियों के लिए अनुकरणीय साबित हुई।

2. 3 फरवरी, 1954 को जन्मे, डॉ. सिद्धलिंगय्या ने डी.एल. नरसिम्हाचार गोल्ड मेडल प्राप्त करते हुए वर्ष 1976 में बेंगलूर विश्वविद्यालय से एम ए की डिग्री हासिल की। उन्हें बेंगलूर विश्वविद्यालय द्वारा 'ग्रामदेवथेगलु'—लोक देवता नामक अपने उल्लेखनीय डॉक्टरेट शोध प्रबंध के लिए कन्नड़ में पीएच.डी से सम्मानित किया गया। स्नातकोत्तर स्तर पर 30 से अधिक वर्षों के शिक्षण अनुभव के साथ, डॉ. सिद्धलिंगय्या ने बेंगलूर विश्वविद्यालय में विभिन्न पदों पर अपनी सेवायें प्रदान की।

3. डॉ. सिद्धलिंगय्या अपने छात्र जीवन से ही एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जाने जाते थे। उनका अपनी कविताओं और भाषणों के माध्यम से जनता से प्रत्यक्ष जुड़ाव रहा है। वे कर्नाटक दलित संघर्ष समिति और बंदया साहित्य संगठन के संस्थापक सदस्य रहे, और उन्होंने जाति और वर्ग संघर्ष के खिलाफ संघर्ष किया। दलित और प्रगतिशील आंदोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी ने उन्हें जनकवि बना दिया। उनके गीतों ने युवा दलितों में नया आत्मविश्वास जगाया। उनकी क्रांतिकारी कविताओं ने दलित और बंदया कविता के स्वर को आकार दिया।

4. डॉ. सिद्धलिंगय्या अपनी रचनात्मक सोच के साथ—साथ बुद्धि एवं विवेक—सम्पन्नता के लिए जाने जाते थे। उन्होंने कन्नड़ साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे — कविता, नाटक, लघु कथाएँ, आलोचना और आत्मकथा आदि में कई रचनाएँ लिखी। अपने ट्रैजिकोमिक मोड में रचित उनकी आत्मकथा 'ऊरु—केरी' ने इस विधा में अपनी नवीन शैली के लिए जानी गई। उनकी रचनाओं का विभिन्न भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया। उनके लेखन में आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करने और प्रभावित करने की क्षमता है। 12 वर्षों तक कर्नाटक विधान परिषद के एक मनोनीत सदस्य के रूप में, उन्होंने प्रदर्शित किया कि कैसे एक कार्यकर्ता—बुद्धिजीवी दलित, पीड़ित जनता के लिए एक उल्लेखनीय कार्य कर सकता है। परिषद में, उन्होंने सामाजिक—आर्थिक मुद्दों से संबंधित कई प्रगतिशील विषयों पर प्रासंगिक चर्चा की। उन्हें कन्नड़ विकास प्राधिकरण और कन्नड़ पुस्तक प्राधिकरण, कर्नाटक सरकार के अध्यक्ष के रूप में उनके असाधारण काम के लिए जाना जाता है। उन्होंने अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं में विभिन्न पदों पर रहते हुए अमूल्य योगदान दिया।

5. डॉ. सिद्धलिंगय्या को कई पुरस्कारों और सम्मानों से सम्मानित किया गया, जिनमें से कुछ उल्लेखनीय सम्मान इस प्रकार हैं — 1986 में कर्नाटक राज्योत्सव पुरस्कार, 1983 और 1999 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म गीत रचना के लिए कर्नाटक सरकार पुरस्कार, 1992 में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर शताब्दी समारोह विशेष पुरस्कार, 2001 में लोकगीत पुरस्कार, 2002 में डॉ अम्बेडकर पुरस्कार, नई दिल्ली, 2005 में बाबू जगजीवन राम पुरस्कार, 2007 में नादोजा पुरस्कार, 2012 में अल्वास नुदिसिरी पुरस्कार, 2015 में नामदेव दसल शब्द पुरस्कार, मुंबई, 2017 में एलायंस यूनिवर्सिटी, बेंगलूर से मानद डॉक्टरेट, सेंट्रल यूनिवर्सिटी, गुलबर्गा द्वारा 2018 में मानद डी.लिट, 2018 में नृपतुंगा अवार्ड, 2020 में कर्नाटक सरकार द्वारा पम्पा प्रशस्ति और बुक सेलर्स एंड पब्लिशर्स एसोसिएशन, साउथ इंडिया द्वारा कलिंगर करुणानिधि पोरकिजी अवार्ड (बीएपीएएसआई), 2020।

6. डॉ. सिद्धलिंगय्या का 11 जून, 2021 को देहावसान हो गया।